[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3649

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्रकृति एवं रंग (पर्यावरण के सन्दर्भ में)

श्रीमती भारती पहाड़िया
शोधार्थी
इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विष्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

असंख्य पहाड़, पेड़, नदियां, झीलें, फूल–पत्तियां, पशु–पक्षी अथवा मानव मात्र इस प्रकृति के अंग है। मानव ने अपनी सौन्दर्यानुभूति को कला के माध्यम से व्यक्त किया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार – **" कलाकार प्रकृति प्रेमी है। अतः उसका दास भी है और प्रेमी भी। "** कलाकार प्रकृति में व्याप्त रंगतों को एवं उनके प्रभाव को फलक पर उतारते हैं, अमूर्त अभिव्यंजनावादी वस्तु का सूक्ष्म अध्ययन का उसके प्रभावों का तूलिकाघातों के वैविध्य से प्रभावपूर्ण बनाते हैं। इस प्रकार रंगों के आकर्षण से चित्र और जीवन सजीव हो उठते हैं। मानव जीवन में रंग का महत्वपूर्ण स्थान है। रंगों के प्रति मानव का आकर्षण कभी घटा नहीं है। इसलिए तो आदिम गुहावासियों से लेकर आधुनिक मानव तक ने सौन्दर्य के विकास में रंग का सहारा लिया है।
रंगों में मानव की मानसिक भावनाओं को उद्वेलित करने की असीम षक्ति निहीत है। रंगों का यह अद्भुत संसार कमरे की रंग व्यवस्था से लेकर बाग–बगीचों में फूल–पौधों की रंग योजना तक में देखा जाता है। हमारी प्रकृति रंगों से सरोबार है। हमारी दृष्टि प्रकृति में जहां कही भी पड़ती है वह कोई न कोई रंग लिए स्थित है।एक ओर मनुष्य का आंतरिक जीवन बाह्य जगत के परिणाम से निष्पन्न होता है तो दूसरी ओर मनुष्य अपनी मनोवृत्ति के अनुसार बाह्य जगत को ग्रहण कर लेता है अतः दृष्टि व सृष्टि (प्रकृति) का विभाजन नहीं किया जा सकता है। हमारी संवदनषीलता और मानवीय चेतना का सीधा सम्बन्ध रंगों के संयोजन से है।

रंग की परिभाषा – रंग प्रकाष का गुण हैं, कोई स्थूल वस्तु नहीं। इसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है बल्कि अक्षपटल द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाला प्रभाव है। प्रकाष किरणों के द्वारा ही हम वस्तु के रंग देखते है। जो प्रकाषपुंज वस्तु पर पड़ता है, उसमें से वस्तु कुछ प्रकाष को वापस कर लेती है। जो प्रकाष वस्तु वापस करती है उसी में उसका वर्ण तथा अन्य गुण निहीत होते है जिसे दर्षक अक्षपटल पर पड़ने से रंगों का अनुभव करता है। रंगत, मान और सघनता रंग के तीन प्रधान गुण है। रंगत – यह रंग की प्रकृति होती है, जैसे पीलापन, लालपन, नीलापन। मान – यह रंग के हल्के गहरेपन का द्योतक है जैसे गहरा लाल तथा हल्का लाल। सघनता – यह रंग की षुद्धता का परिचायक होता है। जितना तीव्र अथवा प्रखर रंग होगा उसमें उतनी ही सघनता/षुद्धता होगी। उदासीन धूमिल रंग मिला देने से हम उसकी सघनता कम कर सकते है। रंग की षुद्धता तथा परस्पर मिश्रण के आधार पर रंग के कितने ही भेद किये जा सकते है। मुख्य रंग वे है जो किसी मिश्रण के द्वारा प्राप्त नहीं किये जा सकते। लाल, पीला तथा नील पूर्णतया षुद्ध रंग है और इनका अपना अस्तित्व है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में मुख्य रंग पांच – लाल, सफेद, पीला, काला, हरा माने गये हैं।

वैज्ञानिक **न्यूटन** ने 1966 में प्रकाष को सात रंगतों वाला वैज्ञानिक चक्र प्रस्तुत किया। रंगों में वह गुप्त ऊर्जा होती है जो एक अनन्त गतिषीलता प्रदान कर सकती है। अतः किसी भी चित्र में रंग भरते समय रंग/वर्ण के इन प्रतीकात्मक मूल्यों का भी ध्यान रखना चाहिए।

रंगों का हमारी भावनाओं से सम्बन्ध होने से उन्हें उद्वेलित करते है और मानसिक प्रभाव डालते हैं। रंगों के प्रभाव के कारण रंगों को उष्ण व षीतल रंगों में बांटते हैं। जिन रंगों की तरंग गति बहुत अधिक होती है और जो सूर्य तथा आग के रंगों के समीप होते है तथा जिनको देखने से कठिनाई अनुभव हो वे ऊष्ण वर्ण की श्रेणी में आते हैं। जैसे पीला, नारंगी, लाल आदि। इसके विपरित जिन रंगों का प्रकृति की हरियाली – पर्वतों, बर्फ, जल और आकाष आदि से है उनका प्रभाव षीतलता प्रदान करता है तथा उनसे नेत्र देर तक आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। वे षीतल रंगों की श्रेणी में आते हैं, जैसे नीला, हरा, पीतहरा आदि। रंगों के निम्न प्रभाव होते है।

लाल – उत्तेजना प्रसन्नता तथा उल्लास, विप्लव, राष्ट्रप्रेम, युद्ध, भय तथा षंका, क्रोध, घृणा उष्णता, प्रेम, कामुकता तथा आवेग, ओज, अराजकता आदि। इस प्रकार तीव्र भावनाओं का स्पष्टीकरण लाल रंग के माध्यम से सम्भव है। लाल रंग की स्थिति उगते हुए सूर्य में, अग्नि की ज्वाला में हम प्रतिदिन देखते हैं। यदि एक चित्रकार अपनी कृति में युद्ध की विभीषिका या क्रोध को दिखाना चाहता है तो वह माध्यम लाल रंग ही है। किसी के प्रति प्रेम प्रकट करने के लिए लाल गुलाब दिया जाता है। भारत में लाल रंग षुद्धता का द्योतक है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पीला – यह रंग प्रसन्नता, गर्व, प्रफुल्लता, प्रखरता, तापरहित उष्मा, प्रकाष ओज तथा चमक बुद्धिमत्ता, समीपता को अभिव्यक्त करता है। देवता–महापुरूष के चित्र में ओज व दिव्यता के लिए चित्रकार पृष्ठभूमि में पीले गोल चक्र का अंकन करता है। इसी प्रकार प्रकृति में पीला रंग सूर्य की किरणों, सूखी घास, ग्रीष्मऋतु, वृक्षों की पत्तियां, कपड़ों, फलों–फूलों आदि में देखा जाता है।

नीला – नीले रंग की प्रकृति षीतल है। यह षीतलता, राजस्व, सत्यता, आनन्द, रात्रि एवं आकाष, निराषा, दुःख तथा मलिनता, दूरी, मानसिक अवसाद, उद्वीग्नता व स्थिरता तथा दृढ़ता का प्रतीक है। खुला नीला आकाष सर्दी की ऋतु का प्रतीक है। वही षीतलता को भी प्रकट करता है। चित्रकार अपनी कृति में रात्रि के दृष्यांकन में नीले रंग का प्रयोग करता है। खुला नीला आकाष, अथाह समुद्र हमारी आंखों को षीतलता व आनन्द प्रदान करते हैं।

हरा – हरा रंग षिथिलता तथा विश्राम, सुरक्षा, मनोहरता, वसन्त, प्रजनन तथा विकास, प्रफुल्लता एवं प्रचुरता, ईर्ष्या, अषक्तता को प्रकट करता है। प्रकृति में हम जहां कही भी दृष्टि डाले हरा रंग दिखता है। हरे–भरे पहाड़ी पर्यटन स्थल पर जाते है तो हमारा मन प्रफुल्लित हो उठता है। मैं प्रतिदिन नौकरी पर आते–जाते जब हरे–भरे खेतों को देखती हूं तो मुझे बहुत ही आनन्द मिलता है। प्रकृति के इन उपागमों को अपने चित्रांकन में स्थान दिया है।

नारंगी – यह रंग ज्ञान, वीरता, प्रेरणा व लपट का प्रतीक है। इस रंग को संत महात्माओं के वस्त्रों, तिरंगे (वीरता के लिए) व आग की लपटों में देखते हैं। यहां तक की हमारी पृथ्वी का रंग भी नारंगी है।

बैंगनी – यह रंग राजसी सम्मान, रहस्य एवं मृत्यु का प्रतीक है। थाइलैण्ड में बैंगनी कलर को "कलर ऑफ मोर्निंग" कहा जाता है।

सफेद – शान्ति, एकता, स्वच्छता व उज्ज्वलता का प्रतीक है। सफेद कबूतर को षान्ति का प्रतीक माना गया है।

काला – यह रंग अवसाद, अंधेरा, भय व बुराई का प्रतीक है। इसमें जो रहस्य छिपे हैं, अभिव्यक्ति की जो क्षमता है, वह षायद ही किसी रंग में है। दुःख मानव जीवन का सबसे बड़ा सत्य है और यह सत्य काले रंग में ही भली प्रकार उद्घटित होता है।
इस प्रकार उपरोक्त सभी रंग प्रतिदिन अपने आस–पास की वस्तुओं में देखते हैं। धरातल पर प्रकाष की मात्रा कम अथवा अधिक होने से एक ही रंग की वस्तुएं अलग–अलग दिखाई देती है। एक ही वस्तु बन्द कमरे में, धूप में तथा विभिन्न ऋतुओं में अथवा विभिन्न स्थानों पर प्रकाष की मात्रा तथा वातावरण के कारण रंग व्यवस्था की एक ही रंगत की होते हुए भी भिन्न दिखाई देती है।

पहाड़, पेड़–पौधे, नदी, आकाष, समुद्र, धरती, फल–फूल आदि सभी प्रकाष की मात्रा के अनुरूप भिन्न–भिन्न दिखाई देते हैं। प्रकृति से प्रेरणा ग्रहण कर चित्रकार अपनी कृति का निर्माण करता है। आकाष को लालिमा युक्त, खुला नीला व बादलों से भरा, धरती को हरा–भरा व सूखा (पीला), नदी की धारा को ष्वेत दूध की धार के समान, पहाड़ी नदियां हल्का हरापन लिए इसी प्रकार समुद्र का जल नीला रंग लिए अथाह सुकुन देता है। एक कलाकार प्रकृति में व्याप्त इन सहज बिम्बों और रूपाकारों को कलात्मक स्पर्ष से जीवन्त बना देता है। नवकलाकार फलक के बन्धन, माध्यम की सीमितता एवं विषय वस्तु से मुक्त होकर स्वान्तः सुखाय हेतु चित्रों का सृजन करने लगा है। इनका रचनाकर्म विविधताओं से सराबोर है। एक्रेलिक, पेस्टल, ऑइल पेस्टल, क्रेयॉन्स और कई प्रकार के रंगों को अपनी कला अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। जीवन में रंगों के सार्थक प्रभाव, रंग लगाने की नवीन तकनीक, रंगों का डिजिलाइजेषन, सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में रंगों की सार्थकता बढ़ी है। स्थानीय संस्कृति, सामाजिक जीवन और कुदरती सुन्दरता – खेतों और खलिहानों की मनोरम छटाएं मेरी कला का आधार है।